अखिल भारतीय श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड, जोधपुर

कक्षा : दसवीं – जैन सिद्धान्त प्रभाकर उत्तरार्द्ध (परीक्षा 30 जून, 2013)

समय : 3 घण्टे अंक : 100

रोल नं.: (अंकों में) .....

(शब्दों में) .....

परीक्षा केन्द्र की कोड संख्या :

केन्द्राधीक्षक/निरीक्षक के हस्ताक्षर

परीक्षार्थियों के लिए आवश्यक निर्देश–

1. सभी प्रश्नों के उत्तर इसी पत्रक में प्रश्न के नीचे/सामने छोड़े गये रिक्त स्थान में ही लिखें।
2. काली अथवा नीली स्याही का प्रयोग करें, लाल स्याही का नहीं।
3. उत्तीर्ण होने के लिए कम से कम 50 प्रतिशत अंक पाना अनिवार्य है अन्यथा अनुत्तीर्ण माना जाएगा।
4. किसी भी प्रकार की नकल नहीं करें एवं किसी से बातचीत का भी प्रयास नहीं करें। इसके अंक काटे जा सकते हैं अथवा परीक्षा निरस्त की जा सकती है।
5. अधीक्षक, पर्यवेक्षक एवं वीक्षक के निर्देशों का पालन करें।
6. कहीं पर भी अपना नाम अथवा केन्द्र का नाम नहीं लिखें।

जाँचकर्त्ता के प्रयोग हेतु–

प्रश्न क्र.	1	2	3	4	5	6	कुल योग
प्राप्तांक							
पूर्णांक	10	10	10	10	32	28	100
पुनः जाँच							

जाँचकर्त्ता के हस्ताक्षर

प्र.1 निम्नलिखित प्रश्नों में से सही उत्तर का क्रमाक्षर कोष्ठक में लिखिए :- **10x1=(10)**

(a) **सुख विपाक सूत्र के अंतिम अध्ययन का नाम है -**

(क) जिनदास (ख) महाबल

(ग) वरदत्त (घ) महाचन्द्र ( )

(b) **रत्नप्रभा, शर्कराप्रभा में लेश्या है -**

(क) कृष्ण (ख) नील

(ग) कापोत (घ) तेजो ( )

(c) **चौथी नरक में नरकावास हैं -**

(क) 3 लाख (ख) 10 लाख

(ग) 15 लाख (घ) 25 लाख ( )

(d) **मित्र का कार्य करने वाले देवों को कहते हैं -**

(क) सामानिक (ख) पारिषद्य

(ग) अनीक (घ) प्रकीर्णक ( )

(e) **नवग्रैवेयक देवों का शरीर होता है -**

(क) 2 हाथ का (ख) 1 हाथ का

(ग) 4 हाथ का (घ) 7 हाथ का ( )

(f) **जिसमें वर्ण, गन्ध, रस, स्पर्श हो, उसे कहते हैं -**

(क) अरूपी (ख) रूपी

(ग) स्वरूपी (घ) द्रव्य ( )

(g) **निम्न में काल द्रव्य का उपकार है -**

(क) सुख-दुःख (ख) जीवन

(ग) मरण (घ) परत्व ( )

(h) **चन्द्रमा, मणि, जुगनू आदि का शीतल प्रकाश है -**

(क) भेद (ख) आतप

(ग) प्रकाश (घ) उद्योत ( )

(i) **जीव पर्याय का थोकड़ा पन्नवणा सूत्र के पद में चलता है -**

(क) पांचवें (ख) छठें

(ग) आठवें (घ) छत्तीसवें ( )

(j) जीव पर्याय के थोकड़े में उत्पत्ति के प्रथम समय में माना है -

(क) केवलज्ञान (ख) विभंगज्ञान

(ग) मनः पर्यवज्ञान (घ) चक्षुदर्शन ( )

प्र.2 निम्न प्रश्नों के उत्तर 'हाँ' अथवा 'नहीं' में दीजिए :- **10x1=(10)**

(a) जैन दर्शन एक आत्मवादी दर्शन है। ( )

(b) 'आत्मा' वर्ण, गंध, रस, स्पर्श से सहित है। ( )

(c) 'अनेकान्त' समन्वयवादी दृष्टिकोण का प्रतीक एवं पोषक है। ( )

(d) अहिंसा की सिद्धि अपरिग्रह से ही हो सकती है। ( )

(e) संथारापूर्वक मरण में सबके प्रति क्षमा व मैत्री भाव होता है। ( )

(f) प्राकृत भाषा में द्विवचन नहीं होता है। ( )

(g) सम्प्रदान का कारक चिह्न 'का, के, की' होता है। ( )

(h) 'कुण' धातु का अर्थ 'गिरना' होता है। ( )

(i) 'जिण' शब्द का षष्ठी बहुवचन 'जिणस्स' होता है। ( )

(j) 'हो' धातु का मध्यम पुरूष बहुवचन का रूप 'होह' होता है। ( )

प्र.3 मुझे पहचानो :- **10x1=(10)**

(a) मुझमें उत्पन्न हुआ जीव उत्कृष्टतः अनन्त काल तक रहता है। .....

(b) मुझे समय मात्र का भी प्रमाद करने का भगवान मना करते हैं। .....

(c) मेरा और पत्नी का परित्याग करके तू अणगारवृत्ति में प्रवज्जित हुआ है। .....

(d) मुझ पर आरूढ़ होकर हे गौतम ! तू देहरहित सिद्धत्व को प्राप्त करेगा। .....

(e) मैं विश्व के समस्त प्राणियों को चिरकाल में भी दुर्लभ हूँ। .....

(f) मेरे ज्ञान की उत्कृष्ट स्थिति 66 सागर झाझेरी होती है। .....

(g) मैं चूड़ी के समान गोल हूँ तथा मेरा व्यास 1 लाख योजन है। .....

(h) मेरी उत्कृष्ट स्थिति एक पल्योपम का चतुर्थ भाग है। .....

(i) प्रदीप की भांति मेरे प्रदेशों का संकोच-विस्तार होता है। .....

(j) मैं उत्पाद, व्यय और ध्रौव्य, इन तीनों से युक्त हूँ। .....

प्र.4 प्रश्न एवं उत्तर दोनों क्रम से नहीं दिये हुए हैं, आप उत्तर की जोड़ी मिलाकर सही उत्तर रिक्त स्थान में लिखिए :- **10x1=(10)**

(a)	काल	-	रूपी	.....
(b)	आकाश द्रव्य	-	श्रुत	.....
(c)	मूर्तत्व	-	देव-दुन्दुभि बजना	.....
(d)	भवनपति देव	-	अप्रदेशी	.....
(e)	आर्य	-	अपूर्वकरण के द्वारा ग्रन्थि भेद	.....
(f)	स्थविर	-	अवगाहन गुण	.....
(g)	सुभग	-	म्लेच्छ	.....
(h)	दिव्य वस्त्रों की वृष्टि	-	दिशा कुमार	.....
(i)	दुक्करं करेइ	-	सकल कर्मो से मुक्त होगा	.....
(j)	मुच्चिहिइ	-	वल्लभता वाला	.....

प्र.5 निम्न प्रश्नों के उत्तर एक वाक्य में दीजिए :- **16x2=(32)**

(a) **एक पृथ्वीकाय की दूसरे पृथ्वीकाय से अवगाहना, स्थिति, उपयोग से तुलना कीजिए।**

.....

.....

.....

(b) **कुसग्गे ..... मा पमायए। गाथा को पूर्ण कीजिए।**

.....

.....

.....

(c) **अवसोहियं ..... मा पमायए। गाथा को पूर्ण कीजिए।**

.....

.....

.....

(d) **'पमाय बहुलो तथा सुहासुहेहिं कम्मेहिं ' शब्दों के अर्थ लिखिए।**

.....

.....

.....

(e) **मा वंतं पुणो वि आविए। गाथांश का अर्थ लिखिए।**

.....

.....

(f) **गच्छसि मग्गं विसोहिया। गाथांश का अर्थ लिखिए।**

.....

.....

(g) **अट्ठपओवसोहियं तथा निसम्म शब्दों के अर्थ लिखिए।**

.....

.....

(h) **प्रदेश किसे कहते हैं ?**

.....

.....

(i) **वर्तना का क्या आशय है ?**

.....

.....

(j) **चौसठ इन्द्र कौन-कौनसे हैं ?**

.....

.....

(k) **तुमं गिहं गच्छसि तथा वयं दव्वं इच्छामो का हिन्दी अर्थ लिखिए।**

.....

.....

(l) **'पा' धातु के वर्तमान काल के रूप लिखिए।**

.....

.....

(m) **प्राकृत वर्णमाला के व्यंजन लिखिए।**

.....

.....

(n) **सुपात्रदान के तीन भेद लिखिए।**

.....

.....

(o) **पौषध के चार प्रकार लिखिए।**

.....

.....

.....

(p) **जिवियं चयइ तथा दुच्चयं चयइ का अर्थ स्पष्ट कीजिए।**

.....

.....

.....

प्र.6 निम्न प्रश्नों के उत्तर तीन-चार वाक्यों में दीजिए :- (कोई सात) 7x4=(28)

(a) **जघन्य अवधिज्ञान वाले मनुष्य की जघन्य अवधिज्ञान वाले मनुष्य से तुलना कीजिए।**

.....

.....

.....

.....

(b) **जघन्य स्थिति वाले सन्नी तिर्यच पंचेन्द्रिय की जघन्य स्थिति वाले सन्नी तिर्यच पंचेन्द्रिय से तुलना कीजिए।**

.....

.....

.....

.....

(c) **केवलज्ञानी की तुलना केवलज्ञानी से करने पर अवगाहना चतुःस्थानपतित क्यों होती है ?**

.....

.....

.....

.....

(d) **उत्कृष्ट अवगाहना वाले नारकी की आपस में तुलना करने पर स्थिति द्विस्थान पतित क्यों होती है ?**

.....

.....

.....

.....

(e) **वोच्छिंद ..... मा पमायए। गाथा पूर्ण करके अर्थ भी लिखिए।**

.....

.....

.....

.....

(f) **अर्पित और अनर्पित से पदार्थो की सिद्धि कैसे होती है ?**

.....

.....

.....

.....

(g) **सुख विपाक सूत्र से मिलने वाली कोई 4 प्रेरणाएँ लिखिए।**

.....

.....

.....

.....

(h) **संथारामरण और आत्महत्या में कोई चार अन्तर लिखिए।**

.....

.....

.....

.....